महर्षि भरद्वाजकृत

विमान शास्त्र

सम्पादक और अनुवादक—

प्रिय रत्न आर्ष

प्रियग्रन्थमाला संख्या २७

विमान शास्त्र

अर्थात्

महर्षिभरद्वाजकृत "यन्त्रसर्वस्व" ग्रन्थान्तर्गत

वैमानिक प्रकरण

बोधानन्दवृत्तिसहित

सम्पादक, अनुवादक और प्रकाशक—

प्रियरत्न आर्ष

वैदिक रिसर्च स्कालर

वेदानुसन्धान सदन

ज्वालापुर रोड, (हरिद्वार)

पुस्तक मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,

श्रद्धानन्द बलिदान भवन, देहली ।

विक्रमाब्द १९९९ | १९४३ ई० | मंहगाई के अनुसार लागत मात्र मूल्य ।≡)॥

विषय सूची

विषय—	

दो शब्द

वाल्मीकि रामायण का पुष्पक विमान, आबालवृद्ध लोक-विदित ही है, पुनः महाराजा भोज के "समराङ्गण सूत्रधार" ग्रन्थ में पारे से उड़ने वाले विमान का उल्लेख मिलता है। "लघु दारुमयं महाविहङ्गं दृढ़सुश्लिष्टतनुं विधान तस्य। उदरे रसयन्त्रमादधीत ज्वलनाधारमधोऽस्य चाग्निचूर्णम्॥" (समरा० यन्त्रविधाना० ३१।९५) एवं "युक्तिकल्पतरु" ग्रन्थ में भी कहा है "व्योमयानं विमानं वा पूर्वमासीन्महीभुजाम्" (युक्ति० यान प्र०। ५०) व्योमयान या विमान नाम का यान पहिले राजाओं के पास होता था। श्री० वामन० रा० डा० कोकटनूर ने अमरीकन कैमिकल सोसाईटी के अधिवेशन में पढ़े एक निबन्ध में हस्तलिखित "अगस्त्य संहिता" पुस्तक का नाम दिया है जिस में विमान के उड़ाने का वर्णन है। उस में हाइड्रोजन औक्सिजन गैसों और इलैक्ट्रोपैटिंग करने की विधि आदि भी दी है, उक्त निबन्ध के शब्द "पुष्पक विमान के आविष्कारक महर्षि अगस्त्य" लेख में "विश्व वाणी" पत्र में प्रकाशित हुए जब पढ़े तो हमें "अगस्त्य संहिता" देखने की धुन हुई। हम इसके लिये राजकीय संस्कृत लाईब्रेरी बड़ोदा पहुँचे, वहाँ उक्त "अगस्त्य संहिता" तो नहीं मिली परन्तु वहाँ के हस्तलिखित ग्रन्थों को टटोलते टटोलते हमें महर्षि भरद्वाज के "यन्त्र सर्वस्व" नामक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का बोधानन्दवृत्तिसहित "वैमानिक प्रकरण" अपूर्ण भाग मिला जिसकी हमने नक़ल कर ली। उक्त "वैमानिक प्रकरण" ग्रन्थ-भाग बड़ोदा लाईब्रेरी में भी बोधानन्द वृत्तिकार के हाथ का नहीं है उसके पश्चात की कापी (नक़ल) है वृत्तिकार बोधानन्द ने

विद्वत्तापूर्ण श्लोकबद्ध वृत्ति लिखी है, परन्तु उसमें कुछ ऐसी अशुद्धियाँ हैं जो वृत्तिकार बोधानन्द जैसे विद्वान् की नहीं किन्तु कापी करने वाले की हैं । जैसे कई स्थानों में 'श्रुति' के स्थान पर 'श्रृति' लिखा हुआ है जो बोधानन्द से भिन्न गुजरात जैसे प्रान्त वासी का लेख है क्योंकि गुजरात में 'ऋ' का 'रु' उच्चारण करते हैं। अतः 'श्रु' के स्थान पर 'श्रृ' लिखा गया। एवं रहस्य प्रकरण में एक जगह आधा श्लोक पृष्ठ २४ पर कापी करने में छूट गया है जिस में विमान का आकाशाकार और जलदरूप वर्णन था क्योंकि विना इन दोनों के रहस्यों की बत्तीस संख्या पूरी नहीं होती आगे पूरे बत्तीस रहस्यों के विवरण में उन दोनों का विवरण किया भी है इत्यादि अशुद्धियां तथा छूट हैं जिनको हमने उस उस स्थल पर उन्हें सूचित किया है। यह वही ग्रन्थ-भाग है जिसका सम्पादन और अनुवाद करके हम पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं।

हम हिज हाईनेस श्रीमन्त राजाधिराज महाराज गायकवाढ बड़ोदा का बहुशः धन्यवाद करते हैं जिनकी संस्कृत-लाईब्रेरी में प्राचीन संस्कृति के संरक्षणार्थ चौदह सहस्र हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह है जहां यह ग्रन्थरत्न हमें मिला। पुनः उक्त लाईब्रेरी के अध्यक्ष श्री०डा० विनयतोष जी भट्टाचार्य P.H.D का भी हार्दिक धन्यवाद करते हैं। जिन्होंने हस्तलिखित ग्रन्थों का यथेष्ट उपयोग लेने का हमें अवसर प्रदान कर अनुगृहीत किया । श्री० ला० बनवारीलाल जी ठेकेदार न्यू देहली के भी हम अत्यन्त आभारी हैं जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन में १००) की सहायता प्रदान की है।

—प्रिय रत्न आर्ष

❀ ओ३म् ❀

विमान शास्त्र

प्राचीनविज्ञानग्रन्थसूची

(१) शक्तिसूत्रम् .... अगस्त्यकृतम् ।
(२) सौदामिनीकला .... — ईश्वरकृता ।
(३) शुद्धिविद्याकलापम् .... आश्वलायनकृतम् ।
(४) ब्रह्माण्डसार: .... व्यासप्रणीत: ।
(५) अंशुज्ञानम 'अंशुमत्तन्त्रम्' .... भरद्वाजकृतम् ।
(६) छन्द: कौस्तुभ: .... पराशरप्रणीत: ।
(७) कौमुदी .... सिंहकोठकृता ।
(८) रूपशक्तिप्रकरणम् .... अङ्गिरसकृतम् ।

(९) करकप्रकरणम्	....	अङ्गिरसकृतम् ।
(१०) आकाशशास्त्रम्	....	भरद्वाजकृतम् ।
(११) लोकसंग्रहः	....	विसरणकृतः ।
(१२) अगतत्त्वलहरी	....	आश्वलायनकृता ।
(१३) प्रपञ्चलहरी	....	वसिष्ठकृता ।
(१४) यन्त्रसर्वस्वम्	....	भरद्वाजकृतम् ।
(१५) लोहशास्त्रम्	....	शाकटायनकृतम् ।
(१६) जीवसर्वस्वम्	....	जैमिनिकृतम् ।
(१७) कर्माब्धिपारः	....	आपस्तम्बकृतः ।
(१८) धातुसर्वस्वम्	....	बौधायनकृतम् ।
(१९) रुक्-हृदयम्	....	अत्रिकृतम् ।
(२०) नामार्थकल्पः	....	अत्रिकृतः ।
(२१) वायुतत्त्वप्रकरणम्	....	शाकटायनकृतम् ।
(२२) वैश्वानरतन्त्रम्	....	नारदकृतम् ।
(२३) धूमप्रकरणम्	....	,, ।
(२४) ओषधिकल्पः	....	अत्रिकृतः ।
(२५) वाल्मीकिगणितम्	....	वाल्मीकिकृतम् ।

नोट—यह सूची हस्तलिखित "वैमानिक प्रकरणम्" पुस्तक में दी हुई है ।

वैमानिकाधिकरणविषयानुक्रमणिका

अध्याय ३

अध्याय ४

अध्याय ५

---

* हस्तलेख में कापी करने वाले के प्रमाद से पुनरुक्ति है।

अध्याय ६

अध्याय ७

अध्याय ८

इति विषयसूचिका समाप्ता॥

नोट—'वैमानिक प्रकरण' की यह विषय सूची हस्तलिखित ग्रन्थ में दी हुई है।

श्रीशारदागणपतिभ्यो नमः

शुभमस्तु†

यन्त्रसर्वस्वे

वैमानिकप्रकरणम्

मङ्गलाचरणम्

यद्विमानगतास्सर्वे यान्ति ब्रह्म परं पदम् ।
तन्नत्वा परमानन्दं श्रु (शृ?) तिमस्तकगोचरम् ॥❀

---

† ये वचन वृत्तिकार बोधानन्द यति के हैं जैसा कि व्याख्यानश्लोक में 'गणपतिं गुरुम्' कथन से स्पष्ट है ।

❀ गुजराती में 'ऋ' का 'रु' उच्चारण करते हैं अतः यहां 'श्रुति' का 'शृति' उच्चारणसमता से लिपिप्रमाद है जोकि वृत्तिकार के पश्चात् किसी गुजराती कापी करने वाले का काम है ।

पूर्वाचार्यकृतान् शास्त्रानवलोक्य यथामति ।
सर्वलोकोपकाराय सर्वानर्थविनाशकम् ॥
त्रयीहृदयसन्दो (ब्दो ?) हसाररूपं सुखप्रदम् ।
सूत्रैः पञ्चशतैर्युक्तं शताधिकरणैस्तथा ॥
अष्टाध्यायसमायुक्तमतिगूढं मनोहरम् ।‡
जगतामतिसन्धानकारणं शुभदं नृणाम् ॥
अनायासाद् व्योमयानस्वरूपज्ञानसाधनम् ।
वैमानिकाधिकरणं कथ्यतेस्मिन् यथामति ॥

मङ्गलाचरणवचनों की बोधानन्दकृत व्याख्या—

व्याख्यान श्लोकाः†

महादेवं महादेवीं वाणीं गणपतिं गुरुम् ।
शास्त्रकारं भरद्वाजं प्रणिपत्य यथामति ॥१॥
स्वतस्सिद्धन्यायशास्त्रं वाल्मीकिगणितं तथा ।
परिभाषाचन्द्रिकां च पश्चान्नामार्थकल्पकम् ॥२॥

---

‡ भरद्वाज महर्षि ने 'वैमानिक प्रकरण' को पांच सौ सूत्रों सौ प्रकरणों और आठ अध्यायों में लिखा है यह इस कथन से स्पष्ट होता है । खेद है चार सूत्र ही यहां हैं शेष गुम गये या कोई अन्य ले गया या अन्वेषणीय हैं अथवा कापी करने वाले को आगे कापी करने का अवसर न मिल सका ।

† मङ्गलाचरणवचन महर्षि भरद्वाज के हैं 'महादेवं.....' से व्याख्यान श्लोक वृत्तिकार बोधानन्द यति के हैं ।

पञ्चवारं विचार्याथ तत्प्रमाणानुसारतः ।
बालानां सुखबोधाय बोधानन्दयतीश्वरः ॥३॥
संग्रहाद् वैमानिकाधिकरणस्य यथाविधि ।
लिलेख बोधानन्दवृत्त्याख्यां व्याख्यां मनोहराम् ॥४॥
व्याख्या लक्षणरीत्यास्य पाणिनीया (ग्या?) दिमानतः ।†
पारिभाषिकरूपत्वाद् व्याख्यातुं नैव शक्यते ॥ ५ ॥

अनुवाद—

महान् देव परमेश्वर महती देवतारूप वाणी-वेदवाणी, निज गुरुवर गणपति को तथा 'यन्त्रसर्वस्व' नामक शास्त्र एवं तत्रस्थ 'वैमानिक प्रकरण' के रचयिता महर्षि भरद्वाज को श्रद्धापूर्वक एवं यथावत् प्रणाम करके स्वतःसिद्ध न्यायशास्त्र तथा वाल्मीकि गणित और परिभाषाचन्द्रिका ग्रन्थ को पुनः नामार्थकल्प ग्रन्थ को पांच वार विचार करके तथा उनके प्रमाणानुसार विद्यार्थियों के सुख बोध—सरल ज्ञान के लिये मुझ बोधानन्द यतीश्वर ने वैमानिक अधिकरण की बोधानन्दवृत्ति नाम की मनोहर व्याख्या को संक्षेप से यथाविधि लिखा है ।१—४❀

इस ग्रन्थकी व्याख्या पारिभाषिकरूप होने से पाणिनीय आदि के अनुसार लक्षणरीति से व्याख्या नहीं की जासकती है ॥५॥

❀ भाषा में अनुवाद हमारा (प्रिय रत्न आर्ष का) है और इस ग्रन्थ का समस्त भाषा का अनुवाद हमारा है ।

† यहां हस्तलेख में 'पाणिनीय्यादिमानतः' प्रयोग में 'नीय्य'

प्रारीप्सितस्य ग्रन्थस्य निर्विघ्नेन यथाक्रमम् ।
परिसमाप्तिप्रचयगमनाभ्यां यथाविधि ॥ ६ ॥
शिष्टाचारपरिप्राप्तमङ्गलाचरणं स्वतः ।
अनुष्ठाय यथाशास्त्रं शिष्यशिक्षार्थमादरात् ॥ ७ ॥
यद्विमानगतास्सर्वेत्युक्तश्लोकाद्यथाक्रमात् ।
स्वेष्टदेवनमस्काररूपमङ्गलमातनोत ॥ ८ ॥
अर्थात्सूचयति ग्रन्थादनुबन्धचतुष्टयम् ।
ब्रह्मानुग्रहसंलब्धवेदराशिः कृपाकरः ॥ ९ ॥

प्रारम्भ करने में अभीष्ट ग्रन्थ की यथाक्रम निर्विघ्नरूप से यथाविधि परिसमाप्ति और विस्तार प्रचार के लिये एवं शिष्यों की शिक्षा के अर्थ शास्त्रानुसार आदर से शिष्टाचार-परम्परा से प्राप्त मङ्गलाचरण का स्वयं अनुष्ठान करके 'यद्विमान गतास्सर्वे' उक्त श्लोक से क्रमानुसार निज इष्टदेव का नमस्काररूप मङ्गल का महर्षि भरद्वाज ने सेवन किया है ॥ ६–८ ॥

परमेश्वर के अनुग्रह से समस्त वेदज्ञान को प्राप्त हुआ, दयालु ग्रन्थकार निज ग्रन्थ से अनुबन्ध चतुष्टय को प्रकरण एवं प्रसङ्ग से सूचित करता है ॥ ९ ॥

यकारद्वित्व है और ऐसा अनेक स्थलों पर आया है, होसकता है यह शैली दाक्षिणात्य हो ।

निर्मथ्य तद्वेदाम्बुधिं भरद्वाजो महामुनिः ।
नवनीतं समुद्धृत्य यन्त्रसर्वस्वरूपकम् ॥ १० ॥
प्रायच्छत्सर्वलोकानामीप्सितार्थफलप्रदम् ।
तस्मिन् चत्वारिंशतिकाधिकारे सम्प्रदर्शितम् ॥ ११ ॥
नानाविमानवैचित्र्यरचनाक्रमबोधकम् ।
अष्टाध्यायैर्विभाजितं शताधिकरणैर्युतम् ॥ १२ ॥
सूत्रैः पञ्चशतैर्युक्तं व्योमयानप्रधानकम् ।
वैमानिकाधिकरणमुक्तं भगवता स्फुटम् ॥ १३ ॥
तत्रादौ मङ्गलश्लोकतात्पर्यं (यस् ?) सन्निरूप्यते ।
उत्तरे तापनीये च शैव्यप्रश्ने च काठके (टके ?)॥१४॥

महर्षि भरद्वाज ने उस वेदरूप समुद्र का निर्मन्थन करके सब मनुष्यों के अभीष्ट फलप्रद "यन्त्र सर्वस्व" ग्रन्थरूप मक्खन को निकाल कर दिया। चालीस अधिकारों से युक्त उस 'यन्त्र सर्वस्व' ग्रन्थ में भिन्न भिन्न विमानों की विचित्रता और रचनाक्रम का बोधक आठ अध्यायों से विभाजित सौ अधिकरणों-वाला पांच सौ सूत्रों से युक्त आकाशयान विमान-प्रधान रूप से जिसमें वर्णित है ऐसा 'वैमानिक अधिकरण' भगवान् भरद्वाज ऋषि ने सम्प्रदर्शित किया एवं स्पष्ट कहा है ॥ १०-१३ ॥

अब प्रथम मङ्गलश्लोकों का तात्पर्य निरूपण किया जाता है उत्तर तापनीय, शैव्य प्रश्न, कठप्रोक्त और माण्डूक्य उपनिषद्

माण्डूक्ये च यदोङ्कारः परापरविभागतः ।
उक्तं स्यादारुरुत्तूणां ब्रह्मप्राप्त्यर्थमादरात् ।। १५ ।।
विमानत्वेन मुनिना तदेवात्राभिवर्णितम् ।
वाच्यार्थलद्त्यार्थभेदात्तद्द्वि (द्वि?)धा भिद्यते श्रु(श्रृ?)तौ।।१६।।
तुरीय एव लद्त्यार्थः प्रणवस्येति कीर्तितः ।
तदेवाखण्डैकरसः परमात्मेति चोच्यते ।। १७ ।।
एत (क ?) दालम्बनं श्रेष्ठमित्यादि श्रु (शृ ?) तिमानतः ।
गमनार्थं साधकानां भक्तया तत्परमं पदम् ।। १८ ।।

में जो ओङ्कार–'ओम्' पर अपर विभाग से वर्णित है वह आरोहण करने को उत्सुकों की ब्रह्मप्राप्ति के अर्थ आदर से कहा गया है। भरद्वाज मुनि ने इस मङ्गलाचरण में उसी ओमात्मक ब्रह्म का विमान रूप से वर्णन किया है, उक्त ओमात्मक ब्रह्म वाच्यार्थ और लद्त्यार्थ के भेद से उपनिषद्रूप श्रुति में दो प्रकारों में विभक्त हो जाता है। प्रणव अर्थात ओम् का तुरीयरूप अर्थात् चतुर्थ अमात्र रूप या वस्तुरूप ही लद्त्यार्थ हैं ऐसा कहा है वही अखण्ड एकरस परमात्मा है ऐसा भी कहा है। यही ओङ्कार रूप आलम्बन श्रेष्ठ है 'एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्' इत्यादि उपनिषद् वचनों के प्रमाणानुसार उपासकों का भक्ति से प्राप्त करने योग्य वह परम पद है १४—१८ ।।

वाचक (:) प्रणवो ह्यत्र विमान इति वर्णितः ।
तमारुह्य यथाशास्त्रं गुरुक्तेनैव वर्त्मना ॥ १९ ॥
ये विशन्ति ब्रह्मपदं ब्रह्मचर्यादिसाधनात् ।
तदत्र मङ्गलश्लोकरूपेण प्रतिपादितः ॥ २० ॥
तदर्थबोधकपदान्यष्ट श्लोके स्मृतानि हि ।
द्वितीय (य्य ?) पदतस्तेषु सम्यगुक्ता मुमुक्षवः ॥ २१ ॥ †
स एव कर्तृवाची स्याज्जीववाचीति चोच्यते ।
यद्विमानगतेप्यत्र वाचकः प्रणवस्स्मृतः ॥ २२ ॥

यहां वाचकरूप ओम् ही विमान है ऐसा वर्णित किया है गुरुद्वारा उपदिष्ट मार्ग से उस पर शास्त्रानुसार आरोहण कर जो उपासक जन ब्रह्मचर्यआदि साधन द्वारा ब्रह्मपद को प्राप्त होते हैं वह ऐसा ब्रह्मपद यहां मङ्गलश्लोकरूप वचन से प्रतिपादित किया है ॥ १९—२० ॥

उसके अर्थबोधक आठ पद यहां श्लोक में स्मरण किए गये हैं—कहे हैं, उनमें द्वितीय पद से मुमुक्षु भली प्रकार कहे हैं। वह ही ओम् कर्तृवाची अर्थात् जगत्कर्ता परमेश्वर का वाचक है और जीववाची अर्थात् जीव का वाचक भी कहा जाता है ‡, यहां जिस विमानपद प्राप्ति पर भी ओम् वाचक

---

† यहां 'द्वितीय्य' में यकारद्वय पूर्व की भांति दाक्षिणात्य हो सकता है ।

‡ ओम् को जीववाची भी कहना यह वृत्तिकार बोधानन्द का है हमारा नहीं हमने तो उसके श्लोक का अनुवाद किया है ।

विमानत्वेनात्र सम्यक्तदेव प्रतिपादितः ।
एष एवादिमपदो भवेत् कर्तृविशेषणम् ॥२३॥

तुरीयपदतः प्रोक्तमवाङ्मानसगोचरम् ।
अखण्डैकरसं ब्रह्म प्राप्तव्यस्थानमुत्तमम् ॥२४॥

उक्तमेतत्कर्मपदमिति श्लोकान्वयक्रमात् ।
प्रणवाख्यविमानेन गमनं यत्प्रकीर्तितम् ॥२५॥

तत्तृतीयपदेनोक्तं वाच्यलक्ष्यैक्यबोधकम् ।
क्रियापदमिति प्रोक्तम(क्तं अ?)न्वयक्रमतः (त?) स्फुटम् ।२६।

विशेषणपदानि स्युः कर्मणस्त्रीण्यथाक्रमम् । +
प्रसिद्धि (द्धः?) द्योतनार्थाय पञ्चमं पदमीरितम् ॥२७॥

निश्चित है। यहां मङ्गलाचरण में विमानरूप से वह ही भली प्रकार प्रतिपादित किया है वह ही आदि का पद अर्थात् ब्रह्मात्मा का प्रथम पाद या ओम् में अकार कर्तृ विशेषण है । तुरीय पद अर्थात्—ब्रह्मात्मा के चतुर्थ पाद या ओम् के अमात्ररूप से वाणी और मन के व्यवहार से रहित अर्थात्—अवर्णनीय और अचिन्त्य अखण्ड एकरस उत्तम प्राप्तव्य स्थानरूप ब्रह्म कहा है।

+ यहां 'त्रीण्यथाक्रमम्' में त्रीणि के अन्तिम इकार का लोप छन्दस्संख्या पूर्ति के लिये या 'त्रीणि अथ आ क्रमम्' मान कर समझना चाहिये।

तथैव सप्तमपदं नित्यानन्दप्रबोधकम् ।
सर्ववेदान्तमानत्वबोधार्थं चाष्टमं पदम् ॥२८॥
नत्वेति यत्पदं प्रोक्तं तत्प्रह्वीभावबोधकम् ।
एतेन तत्त्वमस्यादिवाक्यार्थोक्तमभूत्क्रमात् ॥ २९ ॥
यद्विमानगतेत्यत्र त्वंपदत्वेन वर्णितम् ।
तत्पदार्थत्वेन ब्रह्मपरं पदमितीरितम् ॥३०॥
नत्वेत्यैक्यपरामर्शार्थोऽसि पदार्थबोधकः ।
इत्थं श्लोकात्तत्त्वमसि वाक्यार्थस्सन्निरूपितः ॥३१॥

यह कर्मपद इस प्रकार श्लोकान्वय क्रम में कह दिया ओम् रूप विमान से गमन करना पहुँचना या प्राप्त करना जो कहा गया है। तृतीय पद से वह वाच्य लक्ष्य की एकता का बोधक कहा है वह अन्वयक्रम से क्रियापद स्पष्ट कहा गया है। तीन विशेषण पद कर्म के यथाक्रम हैं पांचवां पद प्रसिद्धि दर्शाने के अर्थ कहा गया है। उसी प्रकार सातवां पद नित्यानन्द का बोधक है और आठवां पद समस्त वेदान्त उपनिषद् वचनों द्वारा माननीयता के दर्शाने के अर्थ है ॥ २१-२८ ॥

मङ्गल वचनों में 'नत्वा' यह पद जो भरद्वाज ऋषि ने कहा है वह आदर-विनय-भाव का दर्शक है इससे 'तत्वमसि' आदि उपनिषद् वाक्यार्थों से कहा हुआ ब्रह्म क्रम से समझना चाहिये। 'यद्विमान गत०' यहां त्वं पदरूप से उपनिषद् वचन में 'तत्त्वमसि श्वेतकेतो' कहा गया है 'तत्' पदार्थरूप से ब्रह्मपरक पद है ऐसा

तदर्थैक्यानुसन्धानरूपमङ्गलमातनोत् ।
एवं विधाय विधिवन्मङ्गलाचरणं मुनिः ॥३२॥
पूर्वाचार्यांश्च तद्ग्रन्थान् द्वितीयश्लोकतोऽब्रवीत् ।
विश्वनाथोक्तनामानि तेषां वक्ष्ये यथाक्रमम् ॥३३॥
नारायणः (णो ?) शौनकश्च गर्गो वाचस्पतिस्तथा ।
चाक्रायणिधुण्डिनाथश्चेति शास्त्रकृतस्स्वयम् ॥३४॥
विमानचन्द्रिका व्योमयानतन्त्रस्तथैव च ।
यन्त्रकल्पो यानबिन्दुः खेटयानप्रदीपिका ॥३५॥

कहा है। 'नत्वा' यह ऐक्य परामर्श (जीवब्रह्म की एकता) के साथ सम्बन्ध रखने वाला 'असि' का पदार्थबोधक है इस प्रकार श्लोक से 'तत्त्वमसि' वाक्य का अर्थ निरूपित किया है। भरद्वाज मुनि ने इस प्रकार विधिवत् मङ्गलाचरण करके उस ऐक्यार्थ के अनुसन्धान रूप मङ्गल का विस्तार किया है+ ॥ २९-३२ ॥

पूर्व आचार्यों और उनके ग्रन्थों को दूसरे श्लोक से कहा है, विश्वनाथ आचार्य के द्वारा कहे हुए उनके नामों को मैं क्रम से कहूँगा। नारायण, शौनक, गर्ग, वाचस्पति, चाक्रायणि और धुण्डि-नाथ ये ऋषि स्वयं शास्त्रकार हैं। विमानचन्द्रिका, व्योमयानतन्त्र, यन्त्रकल्प, यानबिन्दु, खेटयानप्रदीपिका और व्योमयानार्कप्रकाश

+ यहां जीवब्रह्म की एकता का सिद्धान्त वृत्तिकार बोधानन्द का है हमारा नहीं हमने तो उसके वचनों का अनुवाद किया है।

व्योमयानार्कप्रकाशश्चेति शास्त्राणि षट् क्रमात् ।
नारायणादिमुनिभिः प्रोक्तानि ज्ञानवित्तमैः ॥३६॥
विचार्यैतानि विधिवद् भरद्वाजः कृपानिधिः ।
वैमानिकाधिकरणं सर्वलोकोपकारकम् ।
पारिभाषिकरूपेण रचयामास विस्तरात् ॥३७॥

ये छः शास्त्र क्रम से विशेष ज्ञानवेत्ता नारायण आदि मुनियों ने कहे हैं। दयानिधि भरद्वाज ऋषि ने इन शास्त्रों को भली प्रकार विचार कर सर्वलोकोपकारक 'वैमानिक प्रकरण' पारिभाषिक रूप से विस्तार से रचा है॥ ॥ ३३-३७ ॥

॥ महर्षि भरद्वाज के रचे 'वैमानिक प्रकरण' से पूर्व विमानशास्त्र के ग्रन्थ 'विमानचन्द्रिका, व्योमयानतन्त्र, यन्त्रकल्प, यानविन्दु, खेटयानप्रदीपिका, व्योमयानार्कप्रकाश' ये छः थे ।

अथ विमानशब्दार्थे विचारः—

वेगसाम्याद् विमानोऽण्डजानामिति ॥अ० १। सू० १॥

बोधानन्दवृत्तिः—

अण्डजेत्यत्र सूत्रेस्मिन् गृध्राद्याः पक्षिणः स्मृताः ।
आकाशगमने तेषां वेगशक्ति स्ववेगतः ॥ १ ॥
यः समर्थो विशेषेण मातुं गणितसंख्यया ।
स विमान इति प्रोक्तो वेगसाम्याच्च शास्त्रतः ॥२॥

अनुवाद—

सूत्रशब्दार्थ—अण्डजों अर्थात् पक्षियों के वेगसाम्य से विमान कहलाता है।

इस सूत्र में "अण्डजानाम्" पद से गृध्र आदि पक्षी कहे गये हैं आकाशगमन में उनकी वेगशक्ति को जो स्ववेग से गणित-

यद्वा—

गृध्रादिपक्षिणां वेगसाम्यं यस्यास्ति वेगतः।
स विमान इति प्रोक्त (क्तो ?) आकाशगमने क्रमात्॥३॥
इत्थम्भावो हि (भावेति ?) शब्दस्स्याद् (दस्याद्) विमानार्थ विनिर्णये—

लल्लोपि—

विसोप (म) ानं गमने येषमस्ति खमण्डले।
ते विमाना इति प्रोक्ता यानशास्त्रविशारदैः॥४॥

संख्या द्वारा विशेषरूपेण मापने तुलित करने में समर्थ हो वह वि–मान होने से अर्थात् वेगसाम्य से और शास्त्रानुसार (शब्द-शास्त्रानुसार) विमान कहा गया है। अथवा। आकाशगमन में गृध्र आदि पक्षियों के वेग की समता क्रमशः जिसके वेग से हो सकती है वह विमान कहा गया है + ॥ १—३ ॥

विमानार्थ के निर्णय में इस प्रकार भाववाला यह विमान शब्द है। लल्ल आचार्य ने भी कहा है—आकाश-मण्डल में गमन करने में पक्षियों के साथ जिन की उपमा एवं तुल्यता हो वे यानशास्त्रज्ञ विद्वानों द्वारा विमान कहे गये हैं। नारायण

+ऋग्वेद में भी श्येन की उपमा उड़ने में विमान यान को दी है "आ वां रथो अश्विना श्येनपत्वा सुमृलीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ्।" (ऋ० १।११८।१)

नारायणोपि—

पृथिव्यप्स्वन्तरिक्षेषु खगवद्वेगतः स्वयम् ।
यस्समर्थो भवेद् गन्तुं स विमान इति स्मृतः ।। इत्यादि ५ ।।

शङ्खोपि—

स्थानात्स्थानान्तरं गन्तुं यस्समर्थः खमण्डले ।
स विमान इति प्रोक्तो यानशास्त्रविशारदैः ।। इत्यादि ६ ।।

विश्वम्भरः—

देशाद्देशान्तरं तद्वद् द्वीपाद् द्वीपान्तरं तथा ।
लोकाल्लोकान्तरं चापि योम्बरे गन्तुमर्हति ।
स विमान इति प्रोक्तः (ो ?) खेटशास्त्रविदां वरैः ।।७।।

आचार्य ने भी कहा है—पृथिवी जल आकाश में पक्षियों के वेग की भांति स्वयं (यन्त्रादि द्वारा) जो गमन करने को समर्थ हो वह विमान कहा गया है। आचार्य शङ्ख ने भी कहा है—आकाशमण्डल में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने को जो समर्थ हो वह यानशास्त्रज्ञ विद्वानों द्वारा विमान कहा गया है। एवं विश्वम्भर आचार्य ने भी कहा है—आकाश में देश से देश को द्वीप से द्वीप को और लोक से लोक को जो जा सकता हो वह यानशास्त्रज्ञ उच्च विद्वानों द्वारा विमान कहा गया है ।। ४–७ ।।

——— —

एवं विमानशब्दार्थमुक्त्वा शास्त्रानुसारतः ।
अथेदानीं तद्रहस्यविचारंस्स प्रकीर्त्यंते—

रहस्यज्ञोधिकारी ॥ अ० १ । सू० २ ॥

बोधानन्दवृत्ति :—

वैमानिकरहस्यानि (णि ?) यानि प्रोक्तानि शास्त्रतः ।
द्वात्रिंशदिति तान्येव यानयन्तृत्व कर्मणि ॥ १ ॥

अनुवाद—

इस प्रकार शास्त्रानुसार विमानशब्दार्थ कहकर पुनः अब विमानरहस्य विचार वर्णित किया जाता है—

सूत्रशब्दार्थ—रहस्यों का जाननेवाला विमान चलाने में अधिकारी है।

साधकानि भवन्तीति यदुक्तं ज्ञानिभिः पुरा ।
तत्सूत्रस्यादिमपदात्सूचितं भवति स्फुटम् ॥ २ ॥

एतद्रहस्यविज्ञानं विदितं येन शास्त्रतः ।
द्वितीयपदतः प्रोक्तं सोधिकारी भवेदिति ॥ ३ ॥

एतेन यानयन्तृत्वे रहस्यज्ञानमन्तरा ।
सूत्रेधिकारसंसिद्धि र्नेति सम्यग्विनिर्णितम् ॥ ४ ॥

विमानरचने व्योमारोहणे चालने तथा ।
स्तम्भने गमने चित्रगतिवेगादिनिर्णये ॥ ५ ॥

वैमानिकरहस्यार्थज्ञानसाधनमन्तरा ।
यतोधिकारसंसिद्धि र्नेति सूत्रेण वर्णितम् ॥ ६ ॥

शास्त्र द्वारा जो वैमानिक रहस्य बत्तीस कहे हैं वे ही यानचालककर्म में साधक होते हैं यह जो विद्वानों ने पुराकाल में कहा है वह सूत्र के आदिम पद से स्पष्ट सूचित होता है। इस बत्तीस रहस्यविज्ञान को जिसने शास्त्रद्वारा जान लिया है वह विमान का अधिकारी है यह द्वितीय पद से कहा है। इससे यानचालक कर्म में रहस्यज्ञान के बिना विमानाधिकार नहीं है यह भली प्रकार निर्णय दिया है ॥ १—४ ॥

विमान के रचने, आकाश में चढने, चलाने, स्तम्भन करने—नियन्त्रण में रखने, उड़ाने, चित्रगति और वेग आदि देने के निर्णय में वैमानिक रहस्यार्थज्ञानरूप साधन के बिना

ततोधिकारसंसिद्ध्यै तद्रहस्याण्यथाक्रमम् ।
यथोक्तानि रहस्यलहर्यां लल्लादिभिः पुरा ॥ ७ ॥
तथैवोदाहरिष्यामि संग्रहेण यथामति ।

उक्तं हि रहस्यलहर्याम्—

मान्त्रिकस् (को ?) तान्त्रिकस्तद्वत्कृतकश्चान्तरालकः ।
गूढो दृश्यमदृश्यं च परोक्षश्चापरोक्षकः ॥ १ ॥ (८)
सङ्कोचो विस्तृतश्चैव विरूपकरणस्तथा ।
रूपान्तरस्सुरूपश्च ज्योति र्भावस्तमोमयः ॥२॥ (९)
प्रलयो विमुखस्तारो महाशब्दविमोहनः ।
लङ्घनस्सार्पगमनश्चपलस्सर्वतो मुखः ॥ ३ ॥ (१०)

अधिकारसंसिद्धि नहीं है अतः उसे सूत्र में कहा है। अधिकासं-सिद्धि के लिये उन रहस्यों को लल्ल (लल्क) आदि आचार्यों ने पुराकाल में क्रमशः जैसे 'रहस्यलहरी' ग्रन्थ या प्रकरण में कहा है वैसे ही संक्षेप से यहां यथावत् उदाहृत करूंगा ॥ ५–७ ॥

'रहस्यलहरी' में कहा है कि—मान्त्रिक, तान्त्रिक, कृतक, अन्तरालक, गूढ, दृश्य, अदृश्य, परोक्ष, अपरोक्षक, सङ्कोच, विस्तृत, विरूपकरण, रूपान्तर, सुरूप, ज्योतिर्भाव, तमोमय, प्रलय, विमुख, तार, महाशब्दविमोहन, लङ्घन, सार्पगमन, चापल, सर्वतोमुख, परशब्दग्राहक, रूपाकर्षण, क्रियारहस्यग्रहण, दिक्प्र-

परशब्दग्राहकश्च रूपाकर्षणस्तथा ।
क्रियारहस्यग्रहणो दिक्प्रदर्शनमेव च ॥ ४ ॥ (११)
* ... ...
स्तब्धकः(को?)कर्षणश्चेति रहस्यानि यथाक्रमम् (१२)
एतानि द्वात्रिंशद्रहस्यानि (णि ?) गुरोर्मुखात् ॥५॥
विज्ञाय विधिवत्सर्वं पश्चात् कार्यं समारभेत् (१३)
एतद्रहस्यानुभवो यस्यास्ति गुरुबोधनः ॥६॥
स एव व्योमयानाधिकारी स्यान्नेतरे जनाः [३] (१४)
एतेषां सिद्धनाथोक्तरहस्यार्थविवेचनम् ।
संग्रहेण प्रवक्ष्यामि रहस्यज्ञानसिद्धये (१५)

दर्शन, (आकाशाकार, जलदरूप *), स्तब्धक, कर्षण । यथाक्रम इन बत्तीस रहस्यों को गुरुमुख से जानकर पुनः विधिवत् समस्त कार्य प्रारम्भ करना चाहिये ॥ ८—१३ ॥

गुरु से सीखा हुआ यह रहस्यानुभव जिसको है वह ही व्योमयान अर्थात् आकाशयान विमान चलाने का अधिकारी हो सकता है अन्य जन नहीं ॥१४॥

इन बत्तीस प्रकार के विमान विषयक रहस्यों के सिद्धनाथ

---

* हस्तलेख में श्लोकार्द्ध छुटा हुआ है जो किसी कापी करने वाले से छूटा है, जिस श्लोकार्द्ध में 'आकाशाकार, जलदरूप' ये दो रहस्य थे तभी पूरी संख्या ३२ होगी, तथा आगे रहस्यविवरण में २६, ३० संख्या में उक्त दोनों रहस्यों को दिया हुआ भी है ।

(१) तन्त्र मान्त्रिकरहस्यो नाम— मन्त्राधिकारोक्त-रीत्याछिन्नमस्ताभैरवीवेगिनी सिद्धाम्बादिमन्त्रानुष्ठानैरुपलब्ध-सिद्धमर्गोक्तघुटिकापादुकादृश्यादृश्यादिशक्तिभिस्त (भिः त?) था सिद्धाम्बा-ओषध्यैश्व (धीश्व ?) र्यादिमन्त्रानुष्ठानैः सम्प्राप्त ओषधिभिस्तद्द्रा (द्रा ?) वकतैलादिभिश्च भुवनैश्च (नेश्च ?) र्यादिमन्त्रानुष्ठानलब्धमन्त्रशक्तिक्रियाशक्त्यादि-भिश्च कलासंयोजनद्वाराऽभेद्यत्वाच्छेद्यत्वादाह्यत्वाविनाशित्वा-दिगुणविशिष्टविमानरचनाक्रियारहस्यम् ❀ ॥

आचार्य द्वार वर्णित विवेचन को मैं रहस्यज्ञान सिद्धि के लिये संक्षेप से कहूँगा ॥१५॥

(१) मान्त्रिक रहस्य विचार—मन्त्राधिकार में कही रीति के अनुसार छिन्नमस्ता भैरवी वेगिनी सिद्धाम्बा † आदि के मन्त्रा-नुष्ठानों से उपलब्ध सिद्ध मार्गों में कही हुई घुटिका, पादुका, दृश्य अदृश्य ‡ आदि की शक्तियों द्वारा तथा सिद्धाम्बा ओषधि * ऐश्वर्य

❀ हस्तलेख में 'द्वारा अभेद्यत्वअच्छेद्यत्वं अविनाशित्वादि' सन्धि रहित ऐसा पाठ है ।

† छिन्नमस्ता आदि चार प्रकार की विद्युत् के नाम पारिभाषिक प्रतीत होते हैं जो यन्त्र में प्रयुक्त की जाती है ।

‡ घुटिका आदि यन्त्र के अंगों साधनों के जातिवाचक नाम हैं—

* राजनिघण्ट में सिद्धौषधियों' पांच ओषधियों का नाम बतलाये हैं—

(२) तान्त्रिकरहस्यो नाम—महामायाशम्बरादितान्त्रिक-शास्त्रोक्तानुष्ठानमार्गात्तत्तच्छक्तयनुसन्धानरहस्यम् ॥

(३) कृतकरहस्यो नाम—विश्वकर्मछायापुरुषमनु-मयादिंशास्त्रानुष्ठान (नु ?) द्वारा तत्तच्छक्तयनुसन्धानपूर्वकं-तात्कालिकसंकल्पानुसारेण विमानरचनाक्रमरहस्यम् ॥

आदि के मन्त्रानुष्ठानों से प्राप्त ओषधियों एवं उनके द्रावक तैल+ आदि से भुत्रन ऐश्वर्य आदि मन्त्रानुष्ठानों से प्राप्त मन्त्रशक्ति (विद्यायुक्त विचार शक्ति) एवं क्रियाशक्ति आदि से कलासंयोजन द्वारा अभेद्यता अच्छेद्यता अदाह्यता अविनाशिता आदि गुणविशिष्ट विमानरचनारूप क्रियारहस्य विचार है।

(२) तान्त्रिकरहस्यविचार—महामाया शम्बर आदि तान्त्रिक शास्त्र में कहे अनुष्ठान मार्ग से उस शक्ति का अनुसन्धानरहस्य विचार है॥

(३) कृतक रहस्य विचार—विश्वकर्मा, छायापुरुष, मनु, मय‡ आदि (यन्त्राविष्कारक महर्षियों के) शास्त्रों के अनुष्ठान-

---

तैलकन्दसुधाकन्दरुदन्ता सर्पपाशीघु।
तैलकन्दः सुधाकन्दः क्रोडदन्ती रुदन्तिका ॥
सर्पनेत्रयुताः पञ्च सिद्धौषधिसंज्ञका ॥ (रा० नि०)

\+ यन्त्र में तैल का उपयोग आवश्यक है अतः कहा गया है।

‡ विश्वकर्मा, छायापुरुष, मनु, मय आदि प्राचीन विमान आदि यान यन्त्र के आविष्कारक तथा उन उन शास्त्रों के रचयिता थे। वाल्मीकि रामायण में पुष्पक विमान का आविष्कारक विश्वकर्मा कहा ही है।

(४) अन्तरालरहस्यो नाम---आकाशपरिधिमण्डल-शक्तिसन्धिस्थानेषु विमानप्रवेशो यदा भवति तदोभय- (तदा उभय ?) शक्तिसम्मर्दनेन चूर्णितो भवति । अतो (तः ?) विमानस्य तत्सन्धिप्रवेशसूचनात्तदन्तरालेषु विमानस्तम्भनक्रियाकरणरहस्यम् ॥

(५) गूढ़रहस्यो नाम---वायुतत्त्वप्रकरणोक्तरीत्या वातस्तम्भाष्टमपरिधिरेखापथस्य यासावियासाप्रयासादिवातशक्तिभिः सूर्यकिरणान्तर्गततमश्शक्तिमाकृष्य तत्संयोजनद्वारा विमानाच्छादनरहस्यम् ॥

द्वारा उस शक्ति का अनुसन्धान खोज ध्यान तात्कालिक सङ्कल्प अर्थात् तुरन्त नूतन कल्पना के अनुसार विमानरचनाक्रम रहस्य विचार है।

(४) अन्तरालरहस्य विचार---आकाशपरिमण्डल की शक्तियों के सन्धिस्थानों में जब बिमानप्रवेश हो जाता है तो दोनों शक्तियों के सम्मर्दन से विमान चूर्णित होजाता है टूट जाता है। अतः विमान के उस सन्धिप्रवेश की सूचना करने से उन अन्तरालों में विमानस्तम्भनक्रिया करने रूप रहस्य का विचार होना चाहिये।

(५) गूढ़रहस्यविचार---वायुतत्त्व प्रकरण में कही रीति के अनुसार वातस्तंभ की आठवीं परिधि के रेखामार्ग की यासा वियासा प्रयासा आदि वातशक्तियों के द्वारा सूर्यकिरणान्तर्गत

(६) दृश्यरहस्यो नाम—आकाशमण्डले विद्युद्वात-किरणशक्तयोः परस्परसम्मेलनात्सञ्जातविम्बकृच्छक्तेर्विमान-पीठपुरोभागस्य विश्वक्रियादर्पणविले प्रतिफलं कृत्वा पश्चात्तत्प्रकाशसन्निवेशनद्वारा मायाविमानप्रदर्शनरहस्यम् ॥

(७) अदृश्यरहस्यो नाम—शक्तितन्त्रोक्तरीत्या सूर्य-रथैषादण्डप्राङ्मुखपृष्ठकेन्द्रस्थवैणरथ्यविकरणादिशक्तिभिरा (भिः आ ?) काशतरङ्गस्य शक्तिप्रवाहमाकृष्य वातमण्ड-लस्थवलाहाविकरणादिशक्तिपञ्चके नियोज्य तद्द्वा (द्वा?)रा श्वेताभ्रमण्डलाकारं कृत्वा तदावरणाद्विमानादृश्यकरण-रहस्यम् ॥

अन्धकार शक्ति को आकृष्ट कर उसके संयोजनद्वारा विमाना-च्छादन करना रहस्य है ॥

(६) दृश्य रहस्य विचार—आकाशमण्डल में विद्युत्किरण वातकिरण (वातलहर) इन दोनों की शक्तियों के परस्पर सम्मे-लन से उत्पन्न हुई बिम्बकरने वाली शक्ति से विमान-पीठ के सामनेवाले भाग के विश्वक्रियादर्पणरूप बिल में प्रतिफल छाया करके पश्चात् उस प्रकाश के पड़ने से मायाविमान के दिखलाई पड़ने का रहस्य है ॥

(७) अदृश्य रहस्य विचार—शक्तितन्त्र की कही रीति के अनुसार सूर्यकिरण के ईषादण्ड के सामने पृष्ठ केन्द्र में रहने वाले

(८) परोक्षरहस्यो नाम—मेघोत्पत्तिप्रकरणोक्तशरन्मेघावरणषट्केषु द्वितीया (य्याः?) वरणपथे विमानमन्तर्धाय विमानस्थशक्तयाकर्षणदर्पणमुखात्तन्मेघशक्तिमाहृत्य पश्चाद्विमानपरिवेषचक्रमुखे नियोजयेत् । तेन स्तम्भनशक्तिप्रसारणं भवति, पश्चात्तद्द्वा (द्वाः?) रा लोकस्तम्भनक्रियारहस्यम् ॥

वैणरथ्य विकरण‡ आदि शक्तियों से आकाशतरङ्ग के शक्तिप्रवाह को खींचकर वायुमण्डल में रहनेवाली वलाहा (वलाहाका) विकरण आदि पांच शक्तियों को नियुक्त करके उनके द्वारा सफेद अभ्र मण्डलाकार करके उस आवरण से विमान के अदृश्य करने का रहस्य है ॥

(८) परोक्षरहस्य विचार—मेघोत्पत्ति प्रकरण में कहे शरद् ऋतुसम्बन्धी छः मेघावरणों के द्वितीय आवरण मार्ग में विमान छिपकर विमानस्थ शक्ति का आकर्षण करने वाले दर्पण के मुख से उस मेघशक्ति को लेकर पश्चात् विमान के घेरे वाले चक्रमुख में नियुक्त करे उस से स्तम्भनशक्ति का फैलाव हो जाता है पुनः उसके द्वारा स्तम्भनक्रिया रहस्य हो जाता है ॥

‡ सूर्यरथ-ईषा दण्ड, यह कोई अङ्ग विमान का पारिभाषिक नाम से कहा गया है जिसके आगे पीछे और केन्द्र से वैणरथ्य आदि शक्तियां निकलती हों उनसे आकाश से शक्तिप्रवाह खींचा जाता हो ।

(९) अपरोक्षरहस्यो नाम—शक्तितन्त्रोक्तरोहिणी-विद्युत्प्रसारणेन विमानाभिमुखस्थवस्तूनां प्रत्यक्षनिदर्शन-क्रियारहस्यम् ॥

(१०) सङ्कोचनरहस्यो नाम—यन्त्राङ्गोपसंहारा-धिकारोक्तरीत्या (अन्त?)ऽन्तरिक्षेऽति (अति?) वेगा-त्पलायमानानां विस्तृतखेटयानानामपायसम्भवे विमानस्थ सप्तमकीलीचालनद्वारा तदङ्गोपसंहारक्रियारहस्यम् ॥

(९) अपरोक्ष रहस्य विचार—शक्तितन्त्र में कही रोहिणी विद्युत्—के फैलाने से† विमान के सामने आने वाली वस्तुओं का प्रत्यक्ष दिखलाई देना रूप अपरोक्ष (प्रत्यक्ष) क्रियारहस्य है ॥

(१०) सङ्कोचन रहस्य विचार—यन्त्रोपसंहाराधिकार में कही रीति के अनुसार आकाश में दौड़ते हुए बड़े विमानों के अतिवेग से अपने विमान के नाश की सम्भावना होने पर विमानस्थ सातवीं कीली अर्थात् घुण्डी (बटन-पेंच) के चलाने द्वारा उसके अङ्गों का उपसंहार अर्थात् सङ्कोचन क्रियारहस्य है+॥

---

†यह रोहिणी विद्युत्—कोई फेंकने वाली सर्च लाईट की भांति लाईट होगी।

+इस से बचने, भाग निकलने का तात्पर्य विदित होता है।

(११) विस्तृतरहस्यो नाम—आकाशतन्त्रोक्त-प्रकारेणाका (ण आ ?) शतृतीयपञ्चमपरिधिमण्डलस्था-नीय (य्य ?) मूलवातपरिधिकेन्द्रस्थविमानानां वाल्मीकि-गणितोक्तविमानप्रस्ताररेखाविन्यासमनुसृत्य विमानस्थैका (स्थ एका ?) दशरेखामुखस्थानीयकीलीचालनद्वारा तात्कालिकोपयुक्तप्रमाणमनुसृत्य विमानविचृतक्रियाकरण-रहस्यम् ॥

(१२) विरूपकरणरहस्यो नाम—धूमप्रकरणोक्त-प्रकारेण द्वात्रिंशज्जातीयधूमराशिं यन्त्रद्वारा परिकल्प्य तस्मिन् तरङ्गशक्तयूष्णासञ्जनितप्रकाशं मेलयित्वा पश्चा-

(११) विस्तृत रहस्य विचार—आकाशतन्त्र में कहे प्रकारानुसार आकाश के तृतीय पञ्चम परिधिमण्डलस्थानीय मूलवात-परिधिकेन्द्रस्थ विमानों का वाल्मीकि गणित में कहे विमानप्रस्ताररेखाविन्यास का अनुसरण कर विमानस्थ ग्यारहवीं रेखा के मुखस्थानीय कीली—घुण्डी (वटन-पच) के चलाने द्वारा तात्कालिक उपयुक्त प्रमाण का अनुसरण करके विमान का विस्तृत क्रिया रहस्य है ॥

(१२) विरूपकरण रहस्य विचार—धूम प्रकरण में कहे प्रकारानुसार बत्तीस प्रकार के धूमों की राशि को मन्त्र द्वारा उत्पन्न कर उसमें तरङ्ग शक्ति की उष्णता से उत्पन्न प्रकाश को

द्विमानशिरोभागस्थभैरवीतैलसंस्कारितवैरूपपदर्पणमुखे पद्मकचक्रमुखनालद्वारा पूर्वोक्तप्रकाशशक्ति सन्धार्य द्वात्रिंशदुत्तरशतकक्ष्यप्रमाणवेगात् परिभ्राम्यमाणे सति मण्डलाकारेण महाभयप्रदविकाराकारो जायते विमान-द्रष्टॄणां तत्प्रदर्शनद्वारा महाभयोत्पादनकार्यरहस्यम् ॥

(१३) रूपान्तररहस्यो नाम—तैलप्रकरणोक्त-प्रकारेण गृध्रजिह्वाकुम्भिणीकाकजङ्घादितैलसंस्कारितवैरूप्य-दर्पणे-एकोनविंशज्जातीयधूमं संयोज्य तस्मिन् यानस्थ-

मिलाकर पश्चात् विमानके सिरवाले भागमें रहने वाले भैरवीतैल (कोई पैट्रौल जैसा तैल होगा) से संस्कारित वैरूप दर्पणमुख में पद्मक चक्रमुख की नाल द्वारा पूर्वोक्त प्रकाशशक्ति को युक्त करके एक सौ बत्तीस घांड़ों के वेग से घूमाने पर गोल घेरे रूप से महाभयप्रद विकार का आकार उत्पन्न हो जाता है, विमान देखने वालों को उसके देखने से महाभयोत्पादन कार्य का रहस्य है।

(१३) रूपान्तर रहस्य विचार—तैल प्रकरण में कहे प्रकारानुसार गृध्र जिह्वा, * कुम्भिणी + काकजङ्घा ॥ आदि तैल

---

* आयुर्वेदिक निघण्टुओं में 'गृध्रजिह्वा' नाम से कोई ओषधि नहीं कही किन्तु 'गृध्रपत्रा (धूमपत्रा) और गृध्रनखी (नाखुना) कही है।

+ कुम्भिणीफल (जमालघोटा) कुम्भिणी से अभीष्ट हो सकता है।

॥ गुञ्जा (रत्ति-चौंटली) को काकजङ्घा कहते हैं।

कुरिटणीशक्तिसंयोजनद्वारा विमानद्रष्टृणां सिंहव्याघ्रभल्लूकसर्पगिरिनदीवृक्षादिविकारेणा (ण अ ?) न्यथाकल्पितरूपान्तरप्रदर्शनरहस्यम् ॥

(१४) सुरूपरहस्यो नाम—करकप्रकरणोक्तत्रयोदशजातीयकरकशक्तिमाकृष्य हिमोद्गारवायुना सन्धार्य पश्चाद्विमानदक्षिणकेन्द्रमुखस्थितपुष्पिणीपिञ्जुलादिदर्पणमुखे पूर्वोक्तशक्तिं वातप्रकरणनालद्वारा संयोज्य तस्मिन् सुरघाख्यकिरणशक्तिं सन्धाय तद्द्वा (द्वा ?) रा विमानसन्दर्शकानां विविधपुष्पमाल्योपसेवितदिव्याप्सरस्स्वरूपकतद्वि (कद्वि ?) कारसंदर्शनक्रियारहस्यम् ॥

से संस्कारित वैरूप्यदर्पण में उन्नीस प्रकार के धूम को संयुक्त करके उसमें यानस्थकुरिटणी शक्तिसंयोजनद्वारा विमान के देखनेवालों को सिंह, बाघ, भालू, सर्प, पहाड़ी, नदी, वृक्ष आदि विकार से अन्यथा कल्पित रूपान्तर दीखने का रहस्य।

(१४) सुरूप रहस्य विचार— करकप्रकरण में कही तेरह प्रकार की करकशक्ति को आकृष्ट करके हिमोद्गार वायु अर्थात् निकलती हुई ठण्डी भाप के द्वारा संयुक्त कर पश्चात् विमान के दक्षिण केन्द्र मुख में स्थित पुष्पिणी पिञ्जुल* आदि (के) दर्पणमुखमें पूर्व कही शक्ति को वायु फैलाने वाली नाल

* पुष्पिणी पिञ्जुल किसी विशेष प्रकार की विद्युत् जैसी बत्ती के लिये आया है।

(१५) ज्योतिर्भावरहस्यो नाम—अंशुबोधिन्यामु(न्यांउ?) क्तप्रकारेण संज्ञानादिषोडशसूर्यकलासु द्वादशाद्याषोडशान्तकलाप्रभाकर्षणं कृत्वा-आकाशचतुर्थपथस्थमयूखकन्त्यस्थितवायुमण्डले नियोजयेत्। तथैव खतरङ्गशक्तिप्रभामाहृत्य वातमण्डलसप्तमावरणस्थप्रकाशशक्त्यां सम्मेलयेत्। पश्चादेतच्छक्तिद्वयं विमानस्थनालपञ्चकद्वारा विमानगुहागर्भदर्पणयन्त्रतृतीयकोशे सन्धार्य तद्द्वा (द्वा?) रा विमानद्रष्टृणां बालातपवत्प्रकाशप्रदर्शनरहस्यम् ॥

के द्वारा संयुक्त करके उस में सुरघा (तीव्र गति वाली) नाम की किरणशक्ति को युक्त करके उसके द्वारा विमान देखने वालों को नाना पुष्पमालाओं से सेवित दिव्य अप्सरा स्वरूप वाले विकार के दीखने का रहस्य है ॥

(१५) ज्योतिर्भाव रहस्य विचार—अंशुबोधिनी में कहे प्रकारानुसार सूर्य की संज्ञान आदि सोलह कलाओं में से बारहवीं से लेकर सोलहवीं तक कलाओं की प्रभा का आकर्षण करके आकाश के चतुर्थपथ में रहने वाले किरणरूप अश्व या किरणक्षेत्र में स्थित वायुमण्डल में नियुक्त करे। उसी प्रकार आकाशतरङ्ग की शक्ति की प्रभा का आहरण करके वातमण्डल के सातवें आवरण में स्थित प्रभाशक्ति में मिला दे। पश्चात् इन दोनों शक्तियों को विमानस्थ पांच नालों द्वारा विमानगुहा के मध्य दर्पणयन्त्र के तृतीय कोश में लाकर उसके द्वारा विमान देखने वालों को बाल सूर्य की भांति प्रकाश दीखने का रहस्य है ॥

(१६) तमोमयरहस्यो नाम—दर्पणप्रकरणोक्ततमश्श-(मोश?) क्तया (क्तयप?) कर्षणदर्पणद्वारा तमश्शक्तिमाहृत्य विमानपञ्जरवायव्यकेन्द्रस्थतमोयन्त्रमुखात्तमो विद्युति सन्धाय तत्कीलीचालनान्मध्याह्नकालेऽमा (अमा ?) रात्रिवत्तमो-विकारप्रदर्शनरहस्यम् ॥

(१७) प्रलयरहस्यो नाम—ऐन्द्रजालिकप्रलयपटलो-क्तरीत्या यानपुरोभागकेन्द्रस्थोपसंहारयन्त्रनालात्सप्तजातीय-धूममाकृष्य षड्गर्भविवेकोक्तमेघधूमेऽन्त (अन्त?) र्धाय तद्धूमं विद्युत्संसर्गात्पञ्चस्कन्धवातनालमुखेषु प्रसार्य तद्द्वा(द्वा ?) रा सर्वपदार्थानां प्रलयवन्नाशक्रियाकरणरहस्यम् ॥

(१६) तमोमय रहस्य विचार—दर्पणप्रकरण में कही अन्धकारशक्ति के आकर्षण (या फैलाव?) के द्वारा अन्धकार शक्ति का आहरण करके विमान पञ्जर के वायव्यकेन्द्रस्थ तमोयन्त्र के मुख से अन्धकार को विद्युत में मिलाकर उसकी कीली (घुण्डी बटन) के चलाने से मध्याह्नकाल में अमावस्या की रात्रि की भांति अन्धकाररूप विकार के दीखने का रहस्य है ॥

(१७) प्रलय रहस्य विचार— ऐन्द्रजालिक प्रलयपटल में कही रीति के अनुसार यान के सामने के केन्द्र में रहने वाले सङ्कोचक यन्त्रनाल से सात प्रकार के धूम का आकर्षण करके 'षड्गर्भविवेक' में कहे मेघधूम में छिपाकर उस धूम को विद्युत्सं-सर्ग से पांचस्कन्ध वाले वायुनालमुखों में फैलाकर उसके द्वारा सर्वपदार्थों का प्रलय जैसा नाशक्रियारहस्य है ॥

(१८) विमुखरहस्यो नाम—रुघ्रू (रुघृ ?) दयोक्त-प्रकारेण कुवेरविमुखवैश्वानरादिविषचूर्णशक्ती (: ?) रौद्रीदर्पणपञ्जरतृतीयनाले नियम्य वातस्कन्धकीलीचालन-द्वारा मूर्च्छावस्थाप्रदानेन विवर्णकरणक्रियारहस्यम् ॥

(१९)ताररहस्यो नाम—वातजलसूर्यकिरणप्रभा-शक्तीनां दशसप्तषोडशांशान् खतरङ्गशक्तया संयोज्य तच्छक्तिं तारमुखदर्पणद्वारा विमानमुखकेन्द्रशक्तिनाल-मुखप्रसारणात्सर्वेषां नक्षत्रमण्डलवत्प्रदर्शनक्रियारहस्यम् ॥

(१८) विमुखरहस्य विचार—रघ्रूदय में कहे प्रकारा-नुसार कुवेर विमुख वैश्वानर † आदि विषचूर्ण से उत्पन्न रौद्र शक्ति दर्पणपञ्जर तृतीयनाल में नियन्त्रित करके वातस्कन्धकील के चालनद्वारा मूर्च्छावस्था प्रदान करने से विवर्णकरणक्रिया रहस्य है ॥

(१९) ताररहस्य विचार—वायु, जल, सूर्यकिरणप्र की शक्तियों के दश, सप्त, षोडश अंशों को आकाशतरङ्ग शक्ति से संयुक्त करके उस शक्ति को तारमुखदपण द्वारा विमा मुखकी केन्द्रशक्ति के नालमुख को फैलाने से समस्त नक्षत्रमण्ड के समान प्रदर्शन क्रियारहस्य है ॥

---

† कुवेरविमुख वैश्वानर ये किन्हीं विषचूर्णों के पारिभाषिक नाम हैं

(२०) महाशब्दविमोहनरहस्यो नाम—विमानस्थ-सप्तनालवायुमेकीकृत्य शब्दकेन्द्रमुखेऽन्त (अन्त ?) र्धाय पश्चात् कीलीं (लिं ?) प्रचालयेत् तद्वेगाच्छब्दप्रकाशिकोक्तरीत्या द्विषष्टिध्मानकलासंघहणशब्दवन्महाशब्दो जायते तद्रवस्मरणात् सर्वेषां हृदयकम्पनं भवति किष्कुत्रयप्रमाणकम्पनं यदा भवति स्मृतिविस्मरणं भवति तद्द्वा (द्वा ?) रा परेषां विमोहनक्रियारहस्यम् ॥

(२१) लङ्घनरहस्यो नाम—वायुतत्त्वप्रकरणोक्तप्रकारेण वातमण्डलपरिधिरेखासु विमानसञ्चारकाले यदा सूर्यगोलवाडवामुखकिरणज्वालाप्रवाहो (हः ?) विमाना-

(२०) महाशब्दविमोहनरहस्य विचार—विमानस्थ सात नालों के वायु को एक करके शब्दकेन्द्रमुख में बन्द करके पश्चात् कीली (घुण्डी) को चलावे, उसके वेग से शब्दप्रकाशिका में कही रीति के अनुसार बासठ धौंकने वाली कलाओं के संघहण शब्द (गूंज) के समान महाशब्द उत्पन्न होता है उस शब्द के स्मरण से सब का हृदय काँप जाता है, तीन किष्कुओं (तीन बालिश्त या तीन हाथ-तीन फीट) के प्रमाण-जितना कम्पन जब होता है तब स्मृतिनाश होजाता है उसके द्वारा दूसरों को विमोहित-मूर्च्छित करने का रहस्य है।

(२१) लङ्घन रहस्य विचार—वायु तत्त्व प्रकरण में कहे प्रकारानुसार वातमण्डल परिधिरेखाओं में विमान संचार

भिमुखो भवति तेन विमानः प्रज्वलितो भवति। अतः तन्निवारणा (र्णा ?) र्थंविमानस्थविद्युद्वातशक्तिमेकीकृत्य विमानस्थप्राणकुण्डलीस्थाने सन्धाय पश्चात् कीलीचालनेन विमानोड्डीयनद्वारा कुल्यालङ्घनवद्रेखाद्रेखान्तरलङ्घन-क्रियारहस्यम् ॥

(२२) सार्पगमनरहस्यो नाम—दण्डवक्रादिसप्त-विधमातरिश्वार्ककिरणशक्तीराकृष्य यानमुखस्थवक्रप्रसारण-केन्द्रमुखे नियोज्य पश्चात्तदाहृत्य शक्तयुद्‌ग (दग ?)

समय जब सूर्यगोले के वाडवामुख ❀ (का) किरण ज्वालाप्रवाह विमान के सामने होता है तो उससे विमान जल उठता है, अतः उसके निवारणार्थ विमानस्थ विद्युत् और वायु की शक्ति को मिलाकर विमान के प्राणकुण्डली स्थान (मोटरमशीन) में युक्त करके पीछे कीली घुण्डी चलाने से विमान के ऊर्ध्वगमन—ऊपर उछलने (Jumping) द्वारा नहर नदी के लंघन की भांति एक रेखा से दूसरी रेखा पर लङ्घन करने—फान्दने कूदने (Jumping) का रहस्य है ॥

(२२) सार्पगमनरहस्य विचार—दण्ड वक्र आदि सात प्रकार के वायु और सूर्यकिरण की शक्तियों को आकर्षित करके यानमुख में स्थित वक्रप्रसारण केन्द्रमुख में अर्थात् टेढ़ा फैंकने

❀ हो सकता है यह कोई विमानभेदी तोप की विमानप्रज्वालक सर्च लाईट की भांति का कोई ज्वालोत्पादक साधन हो।

मनकाले प्रवेशयेत् । ततः तत्कीकीचालनाद्विमानस्य सर्प-वद् गमनक्रियारहस्यम् ॥

(२३) चापलरहस्यो नाम—शत्रुविमानसन्दर्शनकाले विमानमध्यकेन्द्रस्थशक्तिपञ्जरकीलीचालने-एकछोटिकावच्छिन्नकाले सप्ताशीत्युत्तरचतुस्सहस्रतरङ्गवेगो जायते तत्प्रसारणाच्छत्रुविमानकम्पनक्रियारहस्यम् ॥

(२४) सर्वतोमुखरहस्यो नाम—स्वपथे स्वविमानविनाशार्थं परविमानशतैरा (ःआ १) वृते सति तदा स्व-

वाले केन्द्र मुख में नियुक्त करके पश्चात् उसका आहरण करके शक्ति को उत्पन्न करने निकालने वाले नाल में प्रवेश करे तब उस कीली (घुण्डी—वटन) को चलाने से विमान का सर्प के समान गमनक्रिया रहस्य है ॥

(२३) चापलरहस्य विचार—शत्रु का विमान दिखलाई पड़ने पर अपने विमान के मध्य केन्द्रस्थ शक्तिपञ्जर की कीली चलाने से एक छोटिकामात्र (तर्जनी अङ्गुष्ठ ध्वनि—चुटकी—क्षणभर) काल में चार हजार सतासी तरङ्गों का वेग उत्पन्न हो जाता है उसके फैलाने से शत्रुविमान के डाँवाडोल होने उलट गिरने का रहस्य है ॥

(२४) सर्वतो मुखरहस्य विचार—अपने मार्ग में अपने विमान के विनाशार्थ दूसरे के सैकड़ों विमानों से घिर जाने पर अपने विमान के शिर की कीली (घुण्डी—वटन) के चलाने से

विमानशिरः केन्द्रकीलीचालनादनेकविमानवत्सर्वतोमुख-संचारक्रियारहस्यम् ॥

(२५) परशब्दग्राहकरहस्यो नाम—सौदामिनीकलोक्तप्रकारेण विमानस्थशब्दग्राहकयन्त्रद्वारा परविमानस्थ-जनसंभाषणादिसर्वशब्दाकर्षणरहस्यम् ॥

(२६) रूपाकर्षणरहस्यो नाम—विमानस्थरूपाकर्षण-यन्त्रद्वारा परविमानस्थितवस्तुरूपाकर्षणरहस्यम् ॥

(२७) क्रियाग्रहणरहस्यो नाम—विमानाधः कीली-चालनाच्छुद्धपटप्रसारणं भवति । ईशान्यकोणस्थद्रावकत्रये

अनेक विमानों की भांति सब ओर संचार करने का क्रिया रहस्य है ॥

(२५) पर शब्द ग्राहक रहस्य विचार—'सौदामिनीकला' (विद्युत्कला) में कहे प्रकारानुसार विमानस्थ शब्दग्राहक यन्त्र के द्वारा आकाश के प्रथम मण्डल की परिधि को आरम्भ करके सात परिधि मण्डल पर्यन्त परविमानस्थ जन संभाषण आदि समस्त शब्दों का आकर्षण रहस्य है ॥

(२६) रूपाकर्षणरहस्य विचार—विमान में स्थित रूप का आकर्षण यन्त्रद्वारा परविमानस्थित वस्तुओं के रूप के आकर्षण का रहस्य है ॥

(२७) क्रियाग्रहण रहस्य विचार—विमान के नीचे की कीली घुण्डी के चलाने से शुद्ध पट फैल जाता है, ईशान्य-

शक्तिसंयोजनं कृत्वा तच्छक्तिसप्तवर्गसूर्यकिरणेषु सन्धार्य-पूर्वोक्तशुद्धपटलं दर्पणाभिमुखीकरणं कृत्वा तन्मुखात्पूर्वोक्त-शक्तिप्रसारणपूर्वकोर्ध्वकीलीचालनद्वारा विमानाधोभागस्थि-तपृथिव्य(ब)न्तरिक्षेषु यद्यत्क्रियारहस्यान्यन्यैः क्रिय(क्रीय्य?)न्ते तत्स्वरूपप्रतिविम्बं शुद्धपटले मूर्तवच्चित्रितं (तो ?) भवति तद्द्वा [द्वा] रा क्रियाग्रहणरहस्यम् ॥

(२८) दिक्प्रदर्शनरहस्यो नाम—विमानमुखकेन्द्रकी-लीचालनेन दिशाम्पतियन्त्रनालपत्रद्वारा परयानागमनदिक्प्र-दर्शनक्रियारहस्यम् ॥

कोणस्थ तीन द्रावकों * में शक्तिसंयोजन करके उस शक्ति को सप्तवर्गसूर्यकिरणों में सन्धान करके पूर्वोक्त शुद्ध पटल को दर्पण के सामने की ओर करके उसके मुखसे पूर्वोक्त शक्ति फैलाने के साथ ऊपर की कीली घुन्डी चलाने के द्वारा विमान के नीचे के भाग में स्थित पृथिवी जल, अन्तरिक्ष में जो जो क्रियारहस्य अन्यों द्वारा किये जाते हैं उनका स्वरूप प्रतिबिम्ब शुद्ध पटल पर मूर्त के समान चित्रित होजाता है उसके द्वारा क्रियाग्रहण रहस्य है ॥

(२८) दिक्प्रदर्शन रहस्य विचार — विमानमुखकेन्द्र की कीली चलाने से 'दिशाम्पति' नामक (दिशाओं के पति) यन्त्र के

---

* ये द्रावक किसी रूप आदि शक्ति के फैलाने वाले साधन प्रतीत होते हैं ।

(२९) आकाशाकाररहस्यो नाम--आकाशतन्त्रोक्त-रीत्या कृष्णाभ्रवारिणां पिचुकन्दमूलभूनागद्रावकाभ्यां याना-वरणाभ्रकपट्टिकामालिप्य तस्मिन् वायुपथकिरणशक्तिसंयो-जनद्वारा विमानमाकाशाकारवत्प्रदर्शनरहस्यम् ॥

(३०) जलदरूपरहस्यो नाम— करकाम्लविल्वतैल-शुल्वलवणधूमसारग्रन्थिकरससर्षपपिष्टमीनावरणद्रवाणां शास्त्रो-

नालपत्र के द्वारा दूसरे के यान की आगमनदिशा का प्रदर्शन रहस्य है ॥

(२९) आकाशाकाररहस्य विचार—आकाशतन्त्र में कही रीति के अनुसार कृष्ण अभ्रक जल तथा पिचुकन्दमूल+ और भूनाग× के द्रावक रस से यान के आवरण अभ्रकपट्टिका को लेप कर देने से उस वायुपथ में किरणशक्तिसंयोजनद्वारा विमान के आकाशाकार होने का प्रदर्शन रहस्य है ॥

(३०) जलदरूपरहस्य विचार—करकाम्ल * दाडिमाम्ल-(दाडिम का तेजाब), बिल्वतैल, शुल्वलवण (ताम्बे का लवण

\+ आयुर्वेदिक निघण्टुओं में 'पिचुकन्द' नाम की ओषधि नहीं है किन्तु पिचुमन्द (निम्ब वृक्ष) तो है ।

× 'वैद्यक शब्द सिन्धु' कोष में 'भूनाग' केंचुए और सीसे धातु के लिये आया है, हो सकता है यहां सीसे धातु का रासायनिक द्राव अभीष्ट हो ।

* 'करकः-दाडिमे, शुल्वं ताम्रे, धूमसारः— गृहधूमे, ग्रन्थिकः— गुग्गुले मण्डूरे च, रसः पारदे (वैद्यक शब्द सिन्धुः)

क्तप्रकारेण भागांशसम्मेलनं कृत्वा मुक्ताफलशुक्तिका लवणसारे संयोज्य सम्मिलितशक्तिं धूमाकारं कृत्वा विमानावरणोपरिस्थितकिरणप्रभामुखसन्धौ-अन्तर्धाय पूर्वोक्तधू (क्त अधू?) माकारद्रावकेण (के न?) विमानावरणलेपनं कृत्वा तदुपरि धूमप्रसारणद्वारा जलदाकारवद्विमानप्रदर्शनरहस्यम् ॥

(३१) स्तब्धकरहस्यो नाम—विमानोत्तरपार्श्वस्थसन्धिमुखनालादपस्मारधूमं संग्राह्य स्तम्भनयन्त्रद्वारा तद्धूम-

नीलाथोथा), धूमसार (गृहधूम) ग्रन्थिकरस (गूगल का द्राव या मण्डूर और पारा), सर्षपपिष्ट (सरसों की पीठी) मीनावरण (मछली का आवरण) इनके शास्त्रोक्त प्रकार से भागांशों को मिलाकर मुक्ताफलशुक्तिका (मोती की सीपी) लवणसार† में संयुक्त करके सम्मिलित शक्ति को धूमाकार करके विमानावरण के ऊपर रहनेवाली किरणप्रभामुखसन्धि में छिपाकर या लगाकर पूर्वोक्त धूमाकार के द्रावक द्वारा विमानावरण के ऊपर लेपन करके उसके ऊपर धूम फैलाने के द्वारा जलदाकार अर्थात् (मेघाकार) के समान विमानप्रदर्शनरहस्य है ॥

(३१) स्तब्धकरहस्यविचार—विमान के उत्तर पार्श्वस्थ

† आयुर्वेदिक निघण्टुओं में लवणसार शब्द नहीं है किन्तु 'लवणक्षार' है जल से उत्पन्न नमक विशेष के लिये आया है। हो सकता है लवणसार से सोडा अभीष्ट हो।

प्रसारणात् परविमानस्थसर्वजनानां स्तब्धीकरणरहस्यम् ॥

(३२) कर्षणरहस्यो नाम—स्वविमानसंहारार्थं परविमानपरम्परागमने विमानाभिमुखस्थवैश्वानरनालान्तर्गतज्वालिनीप्रज्वालनं कृत्वा सप्ताशीतिलिङ्कप्रमाणोष्णं यथा भवेत् तथा चक्रद्वयकीलीचालनात् शत्रुविमानोपरि वर्तुलाकारेण तच्छक्तिप्रसारणद्वारा शत्रुविमाननाशनक्रियारहस्यम् ॥

सन्धिमुखनाल से अपस्मार धूम का संग्रह करके स्तम्भन यन्त्र द्वारा उस धूम के फैलाने से परविमानस्थ सर्वमनुष्यों के स्तब्ध कर देने जड—मूर्छित बना देने का रहस्य है।

(३२) कर्षणरहस्य विचार—अपने विमान के नाशार्थ दूसरे के विमानयानों के लगातार आने पर विमान के सामने वाले वैश्वानर नाल के अन्तर्गत ज्वालिनी + जलाकर सतासी लिङ्क प्रमाण की उष्णता जिससे हो जावे वैसे दो चक्रों की कीली चलाने के द्वारा शत्रुविमान के ऊपर गोलाकर से उस शक्ति को फैलाने के द्वारा शत्रुविमान के नाश करने का क्रिया रहस्य है ॥

+ विद्युन्मय बत्ती प्रतीत होती है।

पञ्चज्ञश्च ॥ अ० १ । सू० ३ ॥

बोधानन्दवृत्तिः—

यथारहस्यविज्ञानं पूर्वसूत्रे निरूपितम् ।
पञ्चावर्तस्वरूपञ्च तथैवास्मिन्निरूप्यते ॥ १ ॥
एतेनोभयविज्ञानादेव यन्तृत्वतामियात् ।
इतिसूत्रद्वयविचारात्सिद्धं भवति ध्रु (धृ ?)वम् ॥२॥

अनुवाद—

सूत्रशब्दार्थ—और पांच का जानने वाला 'अधिकारी' है।

पूर्वसूत्र में जिस प्रकार रहस्यविज्ञान निरूपित किया गया है उसी प्रकार इस सूत्र में पञ्चावर्तस्वरूप (पांच आवर्तों-भँवरों-बवण्डरों का स्वरूप) भी निरूपित किया जाता है। इस भांति दोनों के विज्ञान से ही विमानचालकता को प्राप्त किया जासकता

पञ्चावर्तविचारस्तु शौनकोक्तप्रकारतः ।
रेखादिपञ्चमार्गानुसारादत्र प्रकीर्त्यते ॥ ३ ॥
रेखापथो मण्डलश्च कक्ष्यश्श (ऽश ?) क्तिस्तथैव च ।
केन्द्रश्चे (च्चे?)ति विमानानां मार्गाः खे पञ्चधा स्मृताः ॥४॥

तदुक्तं शौनकीये —

अथाकाशमार्गाण्यनुक्रमिष्यामो रेखामण्डलकक्ष्यशक्तिकेन्द्रभेदात्-भूतशक्तिप्रवाहमार्गाण्याकूर्मादावारुणान्तं वाणमवष्टभ्यैकचत्वारि ँ शं (रिंग् श) त्कोदयै (ये ?) कपञ्चाशल्लक्षनवसहस्राष्टशतसंख्याकानि भवन्ति तेषु भूरादिसप्तलोकविमानास्सञ्चरन्तीति ॥

है यह बात उक्त दोनों सूत्रों के विचार से निश्चित सिद्ध हो जाती है। पञ्चावर्त विचार शौनक ऋषि के कहे प्रकार से रेखा आदि पांचमार्गों के अनुसार यहां वर्णन किया जाता है। रेखापथ, मण्डल, कक्ष्य, शक्ति, केन्द्र ये पांच प्रकार के मार्ग विमानों के आकाश में बतलाए गये हैं॥ १–४ ॥

यह बात शौनकीय शास्त्र में कही है—

अब आकाशमार्गों को कहेंगे। रेखा, मण्डल, कक्ष्य, शक्ति, केन्द्र के भेद से भूतशक्तिप्रवाहमार्ग कूर्म से लेकर अरुण पर्यन्त ('आकूर्मादौ-आ-अरुणान्तं' इस प्रकार पदच्छेद होने पर) या कूर्म से लेकर वरुणपर्यन्त ('आकूर्माद् आ वारुणान्तं' पदच्छेद

एतेषु सूत्रोक्तपञ्चमार्गभेदा यथाक्रमम् ।
यथोक्तं धुण्डिनाथेन तथैवात्र निरूप्यते—
रेखामार्गास्सप्तकोटित्रिलक्षाष्टशतास् (ता?) स्मृताः ।
+द्वाविंशत्कोटयष्टलक्षद्विशतं मण्डले क्रमात् ॥१॥
द्विकोटिनवलक्षत्रिशतं कक्ष्ये निरूपिताः ।
दशकोट्य्येकलक्षत्रिशतं शक्तिपथेरिताः ॥२॥
त्रिंशल्लक्षाष्टसाहस्रद्विशतं केन्द्रमण्डले ।
एवं रेखादिकेन्द्रान्तमण्डलेषु यथाक्रमम् ॥३॥

होने पर *) वाण (आयतन) का अवष्टम्भन करके इक्तालीस से इक्यावन लक्ष नौ सहस्र आठ सौ होते हैं। उनमें 'भूः' आदि सातलोकरूपविमान सञ्चार करते हैं ॥

इन में सूत्रोक्त पांच मार्गभेद यथाक्रम धुण्डिनाथ ने जैसे कहा है यहां निरूपित किया जाता है—

'रेखामार्ग' सात कोटि तीन लाख आठसौ कहे गये हैं, बाईस कोटि आठ लाख दो सौ 'मण्डल' में क्रम से, दो कोटि नौ लाख तीन सौ 'कक्ष्य' में कहे हैं, दश कोटि एक लक्ष तीन सौ 'शक्ति-पथ' से कहे हैं, तीन लाख आठ सहस्र दो सौ केन्द्रमण्डल में इस प्रकार 'रेखामार्ग' से लेकर-'केन्द्र' तक मण्डलों में क्रमानुसार वाल्मीकि गणित से मार्ग संख्या श्लोकों से बतलाई गई है ॥१-३॥

---

* इस पक्ष में 'वारुण' में 'वा' लेखकदोष या स्वार्थ में अण् से आकार है।
+'द्वाविंशत्' इत्येतत्पदं चिन्त्यम्। द्वात्रिंशत् इत्यनेन भवितव्यं किंवा द्वाविंशति' इत्यस्य-इकारलोप आर्षश्छन्दस्संख्यापूर्त्यर्थत्वाच्छान्दसो वा।

वाल्मीकि गणितान्मार्गसंख्या श्लोकैर्नि (नि?) रूपिता ।
एतेषु यानसञ्चारमार्गनिर्णयमुच्यते ॥—
प्रथमाद्याचतुर्थान्तं मार्ग (र्गा ?) रेखापथे क्रमात् ।
भुवर्लोकसुवर्लोकमहोलोकनिवासिनाम् ॥१॥
विमानसञ्चारमार्गा इति शास्त्रेषु वर्णिताः ।
जनोलोकविमानानां गमने मार्गानिर्णयः ॥२॥
द्वितीयाद्यापञ्चमान्तमु (तं उ ?) क्तं कक्ष्यपथे क्रमात् ।
प्रथमाद्यापडन्तास्स्यु (ता स्यु ?) मार्गाशक्तिपथे क्रमात्॥३॥
तपोलोक विमानानामिति शास्त्रविनिर्णयः ।
तृतीया (य्या ?) द्येकादशान्तं ब्रह्मलोकनिवासिनाम् ॥४॥
विमानसञ्चारमार्गाः प्रोक्ताः केन्द्रपथे क्रमात् ।
वाल्मीकिगणितेनैवं गणितागमपारगैः ॥५॥

इनमें यान संचारमार्गों का निर्णय कहा जाता है—

प्रथम से आदि करके चतुर्थ तक मार्ग रेखापथ में क्रम से 'भुवः' लोक, 'सुवः' लोक 'महः' लोक निवासियों के विमान सञ्चार मार्ग इस प्रकार शास्त्रों में वर्णित हैं, 'जनः' लोक विमानों के गमन में मार्ग निर्णय है। द्वितीय से आदि करके पञ्चम तक कक्ष्यपक्ष में क्रम से कहा है। प्रथम से आदि कर छः तक मार्ग शक्तिपथ में क्रमसे कहे हैं । 'तपः' लोक विमानों का है यह शास्त्रनिर्णय है तृतीय से आदि करके एकादश तक 'ब्रह्म'लोक निवासियों के विमान सञ्चार मार्ग केन्द्रपथ में क्रम से कहे हैं।

विमानानां यथाशास्त्रं कृतो (तं ?) मार्गविनिर्णयः।

अथावर्तनिर्णय :—

एवमुक्त्वा विमानानां पञ्चमार्गाण्यथाक्रमम्। ‡
अथेदीनीं तदावर्तनिर्णयस्सन्निरूप्यते ॥६॥

आवर्ता (र्त ?) बहुधा प्रोक्ता मार्गसंख्यानुसारतः।
तेषु यानपथावर्ताः पञ्चैवेति विनिर्णिताः ॥७॥

तदुक्त शौनकीये—

प्रवाहद्वयसंसर्गादावर्तनमिति तान्यनुक्रमिष्यामः। रेखापथे शक्तयावर्तनं मण्डले वातावर्तनं कक्ष्ये किरणावर्तनं शक्तिपथे शैत्यावर्तनं केन्द्रे घर्षणावर्तनमित्यावर्ताः पञ्चधा

इस प्रकार वाल्मीकि गणित से ही गणित शास्त्र के पारंगत विद्वानों ने विमानों का मार्गनिर्णय शास्त्रानुसार किया है॥१-५॥

आवर्त निर्णय—

इस प्रकार विमानों के पांच आवर्तों को क्रमानुसार कहकर अब इस समय उन आवर्तों का निर्णय निरूपति किया जाता है। मार्गसंख्या के अनुसार आवर्त बहुत कहे हैं उनमें यानपथ के आवर्त पांच ही निर्णय किये हैं॥ ६—७ ॥

वह यह शौनकीय ग्रन्थ में कही है—

दो प्रवाहों के संसर्ग से आवर्तन—आवर्त होते हैं, उन्हें

‡ यहां 'मार्गाणि' नपुसंक लिङ्ग के इकार का लोप छन्दः पूर्ति के लिये पूर्व के समान है।

भवन्तीति । आवर्ताः पञ्चसु पञ्चेति हि ब्राह्मणम् ॥

एवं रेखादिमार्गेषु शक्तिद्वयसमाकुलात् ।
आवर्ताः सम्प्रजायन्ते खेटयानविनाशकाः ॥

उक्तं हि मार्गनिवन्धने—

लहयोर्वहयोश्चैव यहयोरहयोस्तथा ।
महयोरन्तरालेषु शक्तयावर्ता इतीरिताः ॥१॥ (लल्लकारिका)
लकारेणात्र भूप्रोक्ता हकारादम्बरं स्मृतम् ।
प्रोक्तास्तयोरन्तराले रेखामार्गा (ग १) स्त्वनेकशः ॥ २ ॥

यहां कहेंगे। रेखापथ में शक्त्यावर्त, मण्डल में वातावर्त, कक्ष्य में किरणावर्त, शक्तिपथ में शैत्यावर्त, केन्द्र में घर्षणावर्त। इस प्रकार आवर्त पांच प्रकार के हैं। आवर्त पांच में पांच हैं ऐसा ब्राह्मण ग्रन्थ में कहा है।

इस प्रकार रेखा आदि मार्गों में दो शक्तियों के टक्कर से आवर्त उत्पन्न होजाते हैं जो कि विमानयानों के विनाशक वन जाते हैं।

'मार्गनिवन्धन' में कहा है—

ल, ह के व, ह के य, ह के तथा र, ह के म, ह के अन्तरालों में शक्त्यावर्त होते हैं ऐसा कहा है। 'ल' से भूमि कही है 'ह' से अम्वर समझा गया, उन दोनों के अन्तराल में रेखामार्ग अनेक हैं। शक्त्यावर्त उनमें अनेक अतिवेग से उत्पन्न हो जाते हैं।

शक्तयावर्तास्तेष्वनन्तास्सं (न्वा सं १") भवन्त्य (वत्य १)
तिवेगतः ।
तैर्भूलोकविमाननां विनाश इति निश्चितः ॥ ३ ॥
अम्बरे वर्णिते स्याद्वहकारात्मना क्रमात् ।
तयोर्मध्ये मण्डलाख्ययानमार्गाः प्रोक्ता विशेषतः ॥ ४ ॥
वातावर्तास्तेष्वनन्तास्सं भवत्यतिवेगतः ।
लोकत्रयविमाननां विनाशस्तेषु वर्णितः ॥ ५ ॥
तथैव यहवर्णाभ्यां वाय्वाकाशे निरूपिते ।
तयोर्मध्ये कक्ष्यमार्गास्त्वनेकास्संप्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥
भवन्ति किरणावर्तास्तेष्वंशूनां प्रवाहतः ।
जनो लोकविमानानां विनाशस्तत्र वर्णितः ॥ ७ ॥

उनके द्वारा भूलोकविमानों का विनाश निश्चित हो जाता है। दो अम्बर व, ह से क्रमशः कहे हैं उनके मध्य में मण्डल नामक मार्ग विशेषतः कहे गये हैं। उनमें अनन्त आवर्त अतिवेग से उत्पन्न होजाते हैं जिनमें तीनों लोकों के विमानों का विनाश वर्णन किया है। इसी प्रकार य, ह वर्णो से वायु आकाश निरूपित किये हैं, उनके मध्य में कक्ष्य मार्ग अनेक हैं उनके अन्दर किरणावर्त अंशुओं के प्रवाह से होजाते हैं वहां 'जनः' लोक विमानों का विनाश वर्णन किया है ॥ १-७ ॥

रवर्णेन रविः प्रोक्तो हवर्णादम्बरं स्मृतम् (तः १)।
तयोर्मध्ये शक्तिमार्गा बहुधा सम्प्रकीर्तिताः ॥ ८ ॥
शैत्यावर्तास्तेषु शक्तिसंसर्गादतिवेगतः ।
सम्भवन्ति विशेषेण खेटयानविनाशकाः ॥ ९ ॥
महामार्तण्डशक्तिस्थप्रवाहांशो मकारतः ।
हकारेणाम्बरञ्चैव वर्णितं स्याद्यथाक्रमम् ॥ १० ॥
तयोर्मध्ये केन्द्रमार्गा बहुधा सम्प्रकीर्तिताः ।
भवन्ति घर्षणावर्तास्तेषु नानामुखाः क्रमात् ॥ ११ ॥
ब्रह्मलोकविमानानां विनाशस्तैर्निरूपितः ।
शैत्योष्णशक्तिन्यूनातिरिक्ताभ्यां मार्गसन्धिषु ॥ १२ ॥

'र' वर्ण से रवि कहा है 'ह' वर्ण से आकाश बतलाया गया, दोनों के मध्य में शक्तिमार्ग बहुत कहे हैं। उनमें शैत्यावर्त अतिवेग से शक्तियोंके संसर्ग से विशेष करके उत्पन्न होजाते हैं जो विमानयानों के नाशक होते हैं। महामार्तण्ड शक्तिस्थ प्रवाहांश 'म' से लिया गया है और 'ह' से आकाश यथाक्रम से वर्णित किये गये हैं। उन दोनों के मध्य में केन्द्रमार्ग प्रायः कहे हैं, उन में घर्षणावर्त नानाप्रकार के क्रम से होते हैं। उनसे ब्रह्मलोक विमानों का विनाश शैत्य-उष्णशक्तियों के न्यूनाधिक होने से मार्गसन्धियों में निरूपित किया गया है ॥ ८-१२ ॥

प्रवाहद्वयसंयोगवेगादावर्तनं क्रमादिति ।
एवं रेखादिमार्गेषु-आवर्तास्सन्निरूपिताः ॥ १३ ॥
तैर्विनाशो विमानानामिति शास्त्रविनिर्णयः ।
पूर्वसूत्रोक्तद्वात्रिंशद्रहस्यज्ञानवत्क्रमात् ॥ १४ ॥
पञ्चावर्तस्वरूपञ्च सूत्रेस्मिन् सन्निरूपितम् ।
एतेनोभयविज्ञानादधिकारनिरूपणम् ॥ १५ ॥
सूत्रद्वयेन विधिवद्वर्णितं यानकर्मणि ।
आवर्ताश्शक्तिवातांशुशैत्यघर्षणसंज्ञकाः ॥ १६ ॥
उक्तावर्तेषु विधिवद्विज्ञातव्या विशेषतः ।
पञ्चावर्ता एव यानमार्गसंरुद्धका यतः ॥ १७ ॥

दो प्रवाहों के संयोग के वेग से आवर्त होते हैं एवं रेखादिमार्गों में क्रम से आवर्त निरूपित किये हैं। उनसे विमानों का विनाश होता है ऐसा शास्त्र का निर्णय है। पूर्वसूत्र में कहे बत्तीस रहस्यज्ञान वाला पांच आवर्तों का स्वरूप क्रम से इस सूत्र में निरूपित किया है। इस से दोनों के विज्ञान से अधिकार निरूपण होता है। दो सूत्रों से विधिवत् यानकर्म वर्णन किया है, शक्ति, वात, अंशु, शैत्य, घर्षण संज्ञावाले आवर्त कहे हैं। उक्त आवर्तों में विधिवत् विशेषतः जानने योग्य पांच आवर्त ही हैं जिनसे कि ये यानमार्ग के संरोधक हैं ॥ १३-१७ ॥

अथ विमानाङ्गनिर्णय :—

अङ्गान्येकत्रिंशत् ॥ अ० १ । सू० ४ ॥

बोधानन्दवृत्तिः—

शास्त्रे सर्वविमानानाम (नां अ ?) ङ्गाङ्गीभावतस्स्फु(स्फु?)टम् ।
उक्तं यानविदां श्रेष्ठैर्विमानाकारनिर्णये ॥१॥
यथा सर्वाङ्गसंयुक्तो देहस्स (ह स ?) र्वार्थसाधने ।
समर्थस्स्या (र्थ स्या?) द्विमानश्च सर्वाङ्गैस्संयुतस्तथा ॥२॥

अनुवाद—

विमानाङ्ग निर्णय—

सूत्रशब्दार्थ—'विमान के' अङ्ग इकत्तीस होते हैं।

शास्त्र में समस्त विमानों के अङ्गाङ्गी भाव से स्फुट है, यानवेत्ता कुशल विद्वानों ने विमानाकार के निर्णय में कहा है कि जैसे सब अङ्गों से युक्त देह सर्वार्थ साधन में समर्थ होता है इसी प्रकार विमान भी सब अङ्गों से युक्त होकर समर्थ होता है।

विश्वक्रियादर्पणमारभ्य यथाविधि ।
एकत्रिंशद्विमानाङ्गस्थानान्युक्तानि सुरिशः ॥३॥
तानि सर्वाणि विंधवत्संग्रहेण यथाक्रमम् ।
छायापुरुषशास्त्रोक्तप्रकारेणात्र वर्ण्यते ॥४॥
आदौ विश्वक्रियादर्शनस्थानमित्यभिधीयते ।
शक्ताचकर्षणदर्पणस्थानमतः परम् ॥ ५ ॥
परिवेषस्थानमुक्तं विमानावरणतः (तो) परि ।*
अङ्गोपसंहारयन्त्रस्सप्तमे विन्दुकीलके ॥६॥

यथा विधि विश्व क्रियादर्पण को आरम्भ करके इकत्तीस विमानाङ्ग स्थानों को अधिक करके या उत्तमता से कहा है उन सब को विधिवत् संक्षेप से यथाक्रम छायापुरुषशास्त्र में कहे प्रकार से यहां वर्णित किया जाता है ॥१-४॥

आदि में विश्वक्रियादर्शनस्थान कहा जाता है इसके आगे शक्त्याकर्षण स्थान कहा है। परिवेषस्थान (परिधिस्थान) विमानवरण के चारों ओर या ऊपर विमान के अङ्गों का सङ्कोचनयन्त्र सातवें विन्दुकील में। विस्तृत क्रियास्थान ग्यारहवीं रेखा के मध्य में होना चाहिये, वैरूप्यदर्पणस्थान तथा पद्मचक्र मुख ये दोनों

---

* यहां 'विमानावरणतोपरि' में विमानावरणतः परि न होकर विमानावरणतः उपरि' भी हो सकता है विसर्गलोप हो जाने पर त-उ की सन्धि छन्दपूर्ति के लिये समझना चाहिये ।

स्याद्विस्तृतक्रियास्थानं रेखैकादशमध्यगे ।
वैरूप्यदर्पणस्थानं पद्मचक्रमुखं तथा ॥७॥
शिरोभागे विजानीयाद्विमानस्य बुधः (धैः ?) क्रमात् ।
कण्ठे तु कुण्ठिणीशक्तिस्थानमित्युच्यते बुधैः ॥८॥
पुष्पिणीपिञ्जुलादर्शस्थानं दक्षिणकेन्द्रके ।
वामपार्श्वमुखे नालपञ्चकस्थानमुच्यते ॥९॥
गुहागर्भादर्शयन्त्रस्थानं कुक्षिमुखे क्रमात् ।
तमोयन्त्रस्य संस्थानं भवेद् वायव्यकेन्द्रके ॥१०॥
पञ्चवार्तस्कन्धनालस्थानं पश्चिमकेन्द्रके ।
रौद्रीदर्पणसंस्थानं वातस्कन्धाख्यकीलकम् ॥११॥
अधःकेन्द्रे विजानीयाद्विमानस्य यथाक्रमम् ।
शक्तिस्थानं विमानस्य मुखदक्षिणकेन्द्रयोः ॥१२॥

विमान के शिरोभाग में बुद्धिमान् क्रमशः जाने । विमान के कण्ठ में कुण्ठिणीशक्तिस्थान होना बुद्धिमानों ने कहा है । पुष्पिणी-पिञ्जुलादर्श स्थान दक्षिणकेन्द्र में तथा नालपञ्चकस्थान (पांच नालों का स्थान) वाम पार्श्व में कहा जाता है ॥५-६॥

गूहागर्भादर्श यन्त्र का स्थान कुक्षिमुख में क्रमशः कहा है, तमोयन्त्र (अन्धकार करनेवाले यन्त्र) का स्थान वायव्य केन्द्र में होना चाहिये । पञ्चवार्तस्कन्धनाल का स्थान पश्चिम केन्द्र में हो । रौद्रीदर्पण स्थान वातस्कन्ध नामक कील में विमान के अधःकेन्द्र

शब्दकेन्द्रमुखस्थानं वामभागे निरूपितम् ।
विद्युद्द्वा (द्वा १) दशकस्थानं विमानैशान्यकोणके ॥१३॥
प्राणकुण्डलिसंस्थानं यानमूले निरूपितम् ।
भवेच्छक्तयुद्गमस्थानं नाभिकेन्द्रे तथैव च ॥ १४ ॥
वक्रप्रसरणस्थानं विमानाधारपार्श्वके ।
मध्यकेन्द्रे भवेच्छक्तिपञ्जरस्थानकीलकम् ॥ १५ ॥
स्थानं शिरःकीलाख्यं भवेद्यानशिरोपरि । *
शब्दाकर्षणयन्त्रस्य स्थानं पश्चिमपार्श्वके ॥ १६ ॥
रूपाकर्षणयन्त्रस्य स्थानं यानभुजे क्रमात् ।
पटप्रसारणस्थानं यानाधोभागमध्यमे ॥ १७ ॥

में यथाक्रम जानना चाहिये। शब्द केन्द्रमुख स्थान वाम भाग में निरूपित किया है बारह विद्युत् का स्थान विमान के ऐशानीकोण में होना चाहिये ॥१०-१३॥

प्राणकुण्डलीस्थान (गतियन्त्र) यान के मूल में निरूपित किया है तथा शक्त्युद्गमस्थान नाभिकेन्द्र में कहा है। वक्रप्रसारण स्थान विमानाधारपार्श्व में और शक्तिपञ्जरस्थान कील मध्यकेन्द्र में होना चाहिये। शिरःकील नामक स्थान यान के शिर के ऊपर हो, शब्दाकर्षण यन्त्र का स्थान पश्चिम पार्श्व में होना चाहिये। पटप्रसारणस्थान यान के अधोभाग के मध्य में होना चाहिये। ॥ १४—१७ ॥

* 'शिरोपरि' में 'शिरः-उपरि' विसर्गलोप होकर सन्धि छन्द की पूर्ति के लिये है।

दिशाम्पतियन्त्रस्थानं वामकेन्द्रभुजे विन्दुः ।
पट्टिकाभ्रकसंस्थानं (न १) यानावरणमध्यमे ॥ १८ ॥
विमानस्योपरि सूर्यस्य शक्त्याकर्षणपञ्जरम् ।
अपस्मारधूमस्थानं सन्धिनालमुखोत्तरे ॥ १९ ॥
अधोभागे स्तम्भनाख्ययन्त्रस्थानमितीर्यते ।
वैश्वानराख्यनालस्य स्थानं नाभिमुखे विन्दुः ॥ २० ॥
इत्येकत्रिंशतिकस्थाननिर्णयः परिकीर्तितः

दिशाम्पति (दिशाओं के पति) यन्त्र का स्थान वामकेन्द्र-भुजा में विन्दु है, पट्टिकाभ्रक (अभ्रक की पट्टिका) का स्थान यानावरण के मध्य में होना चाहिये। विमान के ऊपर सूर्य की शक्ति को आकर्षण करने वाला पञ्जर हो, अपस्मार धूम का स्थान सन्धिनालमुख के उत्तर भाग में होना चाहिये। अधोभाग में स्तम्भन नामक यन्त्र का स्थान कहा गया है और वैश्वानर नामक नाल का स्थान नाभिमुख में विन्दु है ॥ १८—२० ॥

॥ इकत्तीससंख्यावाला स्थाननिर्णय कहा हुआ समाप्त ॥

वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां

श्री पं० प्रिय रत्न आर्ष की वेदविषयक यह अपने ढंग की अपूर्व पुस्तक है इसमें मित्र-वरुण, इन्द्र की दो हरियों, अश्विनौ दो अश्वियों जैसे महत्वपूर्ण युगल (जोड़ों) का स्वरूप, विश्वमें उनका कार्य और उनका कला, यन्त्र, विमान आदि यानों में उपयोग लेना आदि वर्णित है। विद्या की मूलभूमि वेद है यह भी इस पुस्तक से स्पष्ट सिद्ध हो जाता है। वेदों को मानने वाले और न मानने वाले विद्वानों के भी पढ़ने योग्य है, भाषा और ढंग रुचिकर है। साईज़ २०×३०। १६ पेजी पृष्ठ १५० मूल्य

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

श्रद्धानन्द बलिदान भवन, देहली

ला० सेवाराम चावला द्वारा, चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस, नया बाज़ार देहली में मुद्रित।